हनुमद्ादिषट् कवच प्रयोग

हनुमत्कवच, शत्रुघ्नकवच, भरतकवच, लक्ष्मणकवच, सीताकवच, रामकवच

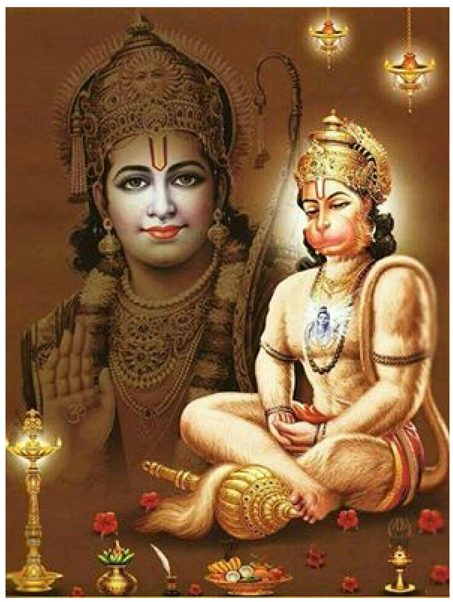

GURUDEV RAJ VERMA

Contact- +91-9897507933**,** +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

प्रस्तुत छः दिव्य कवचों में भगवान् राम की पारिवारिक शक्तियों का वास है, जिनका पाठ करने से भगवान् राम एवं हनुमानजी अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। नित्य त्रिकाल संध्या इन छः कवचों का पाठ करने से बैरियों का नाश होता है, अभिचारिक कर्म समाप्त होते हैं, ग्रहबाधा से मुक्ति मिलती है, सर्वरोगों का दमन होता है एवं परिवार में सुखशान्ति का वास होता है। इन महाकवचों के प्रभाव से धनार्थी को धन, विद्यार्थी को विद्या, पुत्रार्थी को पुत्र एवं मोक्षार्थी को मोक्ष प्राप्त होता है। किसी कारणवश समयाभाव हो तो राम, सीता एवं हनुमान कवच का ही पाठ करें। कवचों को विधिवत् सिद्ध करने से शीघ्र लाभ होता है। भक्तिभाव जाग्रत हो तो अन्त में श्रीराम एवं हनुमान जी की आरती अवश्य करें।

भगवान् द्वारा भक्त की वाणी को सत्य करना– राजस्थान के उदयपुर राज्य में एक सेवक परिवार रहता था। उस परिवार में चार भाई थे। उनमें से तीन भाई तो उदयपुर के शासक राणाजी के यहां सेवक थे, परन्तु चौथे भाई श्रीकामध्वजजी भगवद्भक्त थे।

वे वन में रहकर भजन कीर्तन करते, समय पर घर आकर भोजनादि करते और फिर वन में चले जाते। यही उनका नित्यकर्म था। उनके तीनों भाई उनको 'काम के न काज के दुश्मन अनाज के' मानकर उनसे नाराज रहते थे।

एक दिन तीनों भाईयों ने कामध्वजजी से कहा- भाई! यदि तुम थोड़ी देर के लिये राणाजी के दरबार में जाकर हाजिरी लगा लिया करो तो हमें तुम्हारा भी वेतन मिल जाया करेगा, जिससे घर का खर्चा भी ठीक से चल सकेगा। इस पर कामध्वजजी बोले- 'मैं जिसका सेवक हूं, उसी की सेवा करता हूं और उसी की हाजिरी लगाता हूं, दूसरे से हमें क्या काम?' भाईबन्धु उनका उत्तर सुनकर बहुत नाराज हुए और बोले- 'जब तुम मर जाओगे तो तुम्हें जलायेगा कौन?' कामध्वजजी बोले- 'जिसके सेवक हैं, वही हमें जलायेगा। यह सुनकर भाईबन्धु उन्हें उनके हाल पर छोड़कर चले गये। कुछ समय पश्चात् भजन करते हुए कामध्वजजी का शरीर छूट गया।

कामध्वजजी का शव वन में पड़ा हुआ था। उनके भाईबन्धुवों को उनकी कोई खैर-खबर नहीं थी, परन्तु भक्तवत्सल भगवान् अपने अनन्य भक्त को कैसे भूला देते। उन्होंने अपने प्रियभक्त कामध्वजजी के अन्तिम संस्कार का कार्यभार हनुमानजी को सौंप दिया।

महावीर हनुमानजी ने उनके लिये चन्दन की चिता तैयार की, उस पर कामध्वजजी का शरीर रखकर उनका दाहसंस्कर किया। कामध्वजजी की चिताग्नि से निकले हुए पवित्र धुएं का ऐसा दिव्य प्रभाव हुआ कि उसके स्पर्श और आघ्राण से उस वन में रहने वाले भूतप्रेत, अपवित्र प्रेतयोनियों से मुक्त होकर भगवद् धाम चले गये।

1- एकमुखी श्रीहनुमत् कवचम्- मंत्र-"ॐ नमो हनुमते सर्वग्रहान् भूतभविष्यद्वर्तमानान् समीपस्थान सर्वकालदुष्टबुद्धीनुच्चाटयोच्चाटय परबलान् क्षोभय क्षोभय मम सर्वकार्याणि साधय साधय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् घेघेघे ॐ शिवसिद्धिं ॐ ह्रां ॐ ह्रीं ॐ ह्रूं ॐ ह्रैं ॐ ह्रौं ॐ ह्रः स्वाहा। परकृत्ययन्त्रमन्त्रतन्त्र पराहंकार भूतप्रेतपिशाच दृष्टिसर्वविघ्नदुर्जनचेष्टा कुविद्यासर्वोग्रभयानि निवारय निवारय बन्ध-बन्ध लूंठ लूंठ विलुंच विलुंच किलि किलि सर्वकुयन्त्राणि दुष्टवाचं ॐ फट् स्वाहा।" (यथासम्भव जप करें।)

विनियोग- ॐ अस्य श्रीहनुमत्कवचस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः। श्रीहनुमान् परमात्मा देवता। अनुष्टुप् छन्दः। मारुतात्त्मज इति बीजम्। अञ्जनीसूनुरिति शक्तिः। लक्ष्मणप्राणदातेति कीलकम्। रामदूतायेत्यस्त्रम्। श्रीहनुमान् देवता इति कवचम्।

पिंगाक्षोऽमितविक्रम इति मन्त्रः। श्रीरामचन्द्रप्रेरणया रामचन्द्रप्रीत्यर्थं मम सकलकामना सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

करन्यास एवं हृदयादिन्यास– ॐ ह्रां अंजनीसुताय – अंगुष्ठाभ्यां नमः – हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं रुद्रमूर्तये – तर्जनीभ्यां नमः – शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं रामदूताय – मध्यमाभ्यां नमः – शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं वायुपुत्राय – अनामिकाभ्यां नमः – कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं अग्निगर्भाय – कनिष्ठिकाभ्यां नमः – नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः ब्रह्मास्त्रनिवारणाय – करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः – अस्त्राय फट्।

ध्यानम्– ध्यायेद्बालदिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं देवेन्द्रप्रमुखं प्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा। सुग्रीवादिसमस्तवानरयुतं सुव्यक्ततत्त्वप्रियं संरक्तारुणलोचनं पवनजं पीताम्बरालंकृतम्।। उद्यन्मार्तण्डकोटि प्रकटरुचियुतं चारुवीरासनस्थं मौंजीयज्ञोपवीताभरण रुचिशिखं शोभितं कुण्डलांकम्। भक्तानामिष्टदं तं प्रणतमुनिजनं वेदनादप्रमोदं ध्यायेद्देवं विधेमं प्लवगकुलपतिं गोष्पदीभूत वार्धिम्।। वज्रांगं पिंगकेशाढ्यं स्वर्णकुण्डलमण्डितम्। निगूढमुपसंगम्य पारावारपराक्रमम्।। स्फटिकाभं स्वर्णकान्तिं द्विभुजं च कृतांजलिम्। कुण्डलद्वयसंशोभिमुखाम्भोजं हरिं भजे।। सव्यहस्ते गदायुक्तं वामहस्त कमण्डलुम्। उद्यद्दक्षिणदोर्दण्डं हनूमन्तं विंचितयेत्।।

मन्त्र– ‘‘ॐ नमो हनुमते शोभिताननाय यशोलंकृताय अंजनी गर्भसम्भूताय रामलक्ष्मणानन्दकाय कपिसैन्यप्रकाशन पर्वतोत्पाटनाय सुग्रीवसाह्यकरणपरोच्चाटन कुमारब्रह्मचर्य गम्भीर शब्दोदय ॐ ह्रीं सर्वदुष्टग्रहनिवारणाय स्वाहा। ॐ नमो हनुमते एहि एहि सर्वग्रहभूतानां शाकिनीडाकिनीनां विषमदुष्टानां सर्वेषामाकर्षयाकर्षय मर्दय मर्दय छेदय छेदय मर्त्यान्मारय मारय शोषय शोषय प्रज्वल प्रज्वल भूतमण्डलपिशाचमण्डलनिरसनाय भूतज्वर प्रेतज्वर चातुर्थिकज्वर ब्रह्मराक्षसपिशाचच्छेदनक्रिया विष्णुज्वरमहेशज्वरान् छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि अक्षिशूले शिरोभ्यन्तरे ह्यक्षिशूले गुल्मशूले पित्तशूले ब्रह्मराक्षस कुलप्रबलनागकुल विनिर्विषझटिति झटिति ॐ ह्रीं फट् घेघे स्वाहा। ॐ नमो हनुमते पवनपुत्र वैश्वानरमुखपापदृष्टि षोढदृष्टिहनुमते का आज्ञा फुरे स्वाहा। स्वगृहे द्वारे पट्टके तिष्ठतिष्ठेति तत्र रोगभयं राजकुलभयं नास्ति तस्योच्चारणमात्रेण सर्वे ज्वरा नश्यन्ति ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं घेघे स्वाहा।’’ (यथासम्भव जप करें।)

कवच– श्रीरामचन्द्र उवाच– हनुमान् पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः। पातु प्रतीच्यां रक्षोघ्नः पातु सागरपारगः।।

उदीच्यामूर्ध्वगः पातु केसरीप्रियनन्दनः। अधस्तुविष्णुभक्तश्च पातु मध्यं तु पावनिः।।

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933, 07500292413

लंकाविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम्। सुग्रीव सचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः।।

भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम्। नेत्रे छायापहारी च पावनः प्लवगेश्वरः।।

कपोले कर्णमूले च पातु श्रीरामकिंकरः। नासाग्रमंजनीसूनुः पातु वक्त्रं हरीश्वरः।।

वाचं रुद्रप्रियः पातु जिह्वां पिंगललोचनः। पातु देवः फाल्गुनेष्टश्चुबुकं दैत्यदर्पहा।।

पातु कण्ठं च दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरार्चितः। भुजौ पातु महातेजाः करौ च चरणायुधः।।

नखान्नखायुधः पातु कुक्षौ पातु कपीश्वरः। वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः।।

लंकाविभंजनः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम्। नाभिं च रामदूतस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः।।

गुह्यं पातु महाप्रज्ञो लिंगं पातु शिवप्रियः। ऊरू च जानुनि पातु लंकाप्रासादभंजनः।।

जंघे पातु कपिश्रेष्ठो गुल्फौ पातु महाबलः। अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः।।

अंगान्यमितसत्त्वाढ्यः पातु पादांगुलीस्तथा। सर्वांगानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवित्।।

हनुमत्कवचं यस्तु पठेद्विद्वान्विचक्षणः। स एव पुरुषश्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति।।

त्रिकालमेककालं वा पठेन्मासत्रयं नरः। सर्वान् रिपून्क्षणाज्जित्वा स पुमान् श्रियमाप्नुयात्।।

मध्यरात्रे जले स्थित्वा सप्तवारं पठेद्यदि। क्षयापस्मार कुष्ठादितापत्रयनिवारणः।।

अश्वत्थमूलेऽर्कवारे स्थित्वा पठति यः पुमान्। अचलां श्रियमाप्नोति संग्रामे विजयं तथा।।

बुद्धिर्बलं यशो धैर्यं निर्भयत्वमरोगताम्। सुदार्ढ्यं वाक्स्फुरत्वं च हनुमत्स्मरणाद्भवेत्।।

मारणं वैरिणां सद्यः शरणं सर्वसम्पदानम्। शोकस्य हरणे दक्षं वन्दे तं रणदारुणम्।।

लिखित्वा पूजयेद्यस्तु सर्वत्र विजयी भवेत्। यः करे धारयेन्नित्यं स पुमाञ्छ्रियमाप्नुयात्।।

स्थित्वा तु बन्धने यस्तु जपं कारयति द्विजैः। तत्क्षणान्मुक्तिमाप्नोति निगडात्तु तथैव च।।

य इदं प्रातरुत्थाय पठेत कवचं सदा। आयुरारोग्यसन्तानैस्तस्य स्तव्यः स्तवो भवेत्।।

इदं पूर्वं पठित्वां तु रामस्य कवचं ततः। पठनीयं नरैर्भक्त्या नैकमेव पठेत्कदा।।

हनुमत्कवचं चात्र श्रीरामकवचं विना। ये पठन्ति नराश्चात्र पठनं तद्वृथा भवेत्।।

तस्मात्सर्वैः पठनीयं सर्वदा कवचद्वयम्। रामस्य वायुपुत्रस्य सद्भक्तैश्च विशेषतः।

2- श्रीशत्रुघ्न कवचम्- विनियोग- ॐ अस्य श्रीशत्रुघ्नकवचमन्त्रस्य अगस्तिऋषिः। श्रीशत्रुघ्नो देवता। अनुष्टुप्छन्दः। सुदर्शन इति बीजम्। कैकेयीनन्दन इति शक्तिः। श्रीभरतानुज इति कीलकम्। भरतमन्त्रीत्यस्त्रम्। श्रीरामदास इति कवचम्। लक्ष्मणांशज इति मन्त्रः। श्रीशत्रुघ्नप्रीत्यर्थं सकलमनः कामनासिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

करन्यास एवं हृदयादिन्यास- ॐ शत्रुघ्नाय - अंगुष्ठाभ्यां नमः - हृदयाय नमः। ॐ सुदर्शनाय - तर्जनीभ्यां नमः - शिरसे स्वाहा। ॐ कैकेयीनन्दनाय - मध्यमाभ्यां नमः - शिखायै वषट्। ॐ भरतानुजाय - अनामिकाभ्यां नमः - कवचाय हुम्। ॐ

भरतमन्त्रिणे - कनिष्ठिकाभ्यां नमः - नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ रामदासाय - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः - अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- रामस्य संस्थितं वामे पार्श्वे विनयपूर्वकम्। कैकेयीनन्दनं सौम्यं मुकुटेनातिरंजितम्।। रत्नकंकणकेयूर वनमालाविराजितम्। रत्नाकुण्डलधरं रत्नहारसुनूपुरम्।। व्यजनेन वीजयन्तं जानकीकान्तमादरात्। रामन्यस्तेक्षणं वीरं कैकेयीतोषवर्द्धनम्।। द्विभुजं कंजनयनं दिव्यपीताम्बरान्वितम्। सुभुजं सुन्दरं मेघश्यामलं सुन्दराननम्।। रामवाक्ये दत्तकर्णं रक्षोघ्नं खंगधारिणम्। धनुर्बाणधरं श्रेष्ठं धृततूणीरमुत्तमम्।। सभायां संस्थितं रम्यं कस्तूरीतिलकांकितम्। मुकुटस्थावतंसेन शोभितं च स्मिताननम्।। रविवंशोद्भवं दिव्यरूपं दशरथात्मजम्। मथुरावासिनं देवं लवणासुरमर्दनम्।।

कवच- पूर्वं त्ववतु शत्रुघ्नः पातु याम्ये सुदर्शनः। कैकयीनन्दनः पातु प्रतीच्यां सर्वदा मम।।

पातूदीच्यां रामबन्धुः पात्वधो भरतानुजः। रविवंशोद्भवश्चोर्ध्वं मध्ये दशरथात्मजः।।

सर्वतः पातु मामत्र कैकेयीतोषवर्द्धनः। श्यामलांगः शिरः पातु भालं श्रीलक्ष्मणांशजः।।

भ्रुवोर्मध्ये सदा पातु सुमुखोऽत्रावनीतले। श्रुतकीर्तिपतिर्नेत्रे कपोले पातु राघवः।।

कर्णौ कुण्डलकर्णोऽव्यान्नासाग्रं नृपवंशजः। मुखं मम युवा पातु पातु वाणीं स्फुटाक्षरः।।

जिह्वां सुबाहुतातोऽव्याद्यूपकेतुपिता द्विजान्। चुबुकं रम्यचुबुकः कण्ठं पातु सुभाषणः।।

स्कन्धौ पातु महातेजा भुजौ राघववाक्यकृत्। करौ मे कंकणधरः पातु खंगी नखान्मम्।।

कुक्षी रामप्रियः पातु पातु वक्षो रघूत्तमः। पार्श्वे सुरार्चितः पातु पातु पृष्ठिं वराननः।।

जठरं पातु रक्षोघ्नः पातु नाभिं सुलोचनः। कटी भरतमन्त्री मे गुह्यं श्रीरामसेवकः।।

रामार्पितमनाः पातु लिंगमूरू स्मिताननः। कोदण्डधारीं पात्वत्र जानुनि मम सर्वदा।।

राममित्रः पातु जंघे गुल्फौ पातु सुनूपुरः। पादौ नृपतिपूज्योऽव्याच्छ्रीमान्पादांगुलीर्मम।।

पात्वंगानि समस्तानि ह्यूदारांगः सदा मम। रोमाणि रमणीयोऽव्याद्रात्रौ पातु सुधार्मिकः।।

दिवा मे सत्यसन्धोऽव्याद्भोजने शरसत्करः। गमने कलकण्ठोऽव्यात्सर्वदा लवणान्तकः।।

एवं शत्रुघ्नकवचं मया ते समुदीरितम्। ये पठन्ति नरास्त्वेतत्ते नराः सौख्यभागिनः।।

शत्रुघ्नस्य वरं चेदं कवचं मंगलप्रदम्। पठनीयं नरैर्भक्त्या पुत्र पौत्रप्रवर्द्धनम्।।

अस्य स्तोत्रस्य पाठेन यं यं कामं नरोऽर्थयेत्। तं तं लभेन्निश्चयेन सत्यमेतद्वचो मम।।

पुत्रार्थी प्राप्नुयात्पुत्रं धनार्थी धनपमाप्नुयात्। इच्छाकामं तु कामार्थी प्राप्नुयात्पठनादिना।।

कवचस्यास्य भूम्यां हि शत्रुघनस्य विनिश्चयात्। तस्मादेतत्सदा भक्त्या पठनीयं नरैः शुभम।।

3- श्रीभरत कवचम्- विनियोग- ॐ अस्य श्रीभरत कवचमन्त्रस्यागस्त्य ऋषिः। श्रीभरतो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। शंख इति बीजम्। कैकेयीनन्दन इति शक्तिः। भरतखण्डेश्वर इति कीलकम्। रामानुज इत्यस्त्रम्। सप्तद्वीपेश्वरदास इति कवचम्। रामांशज इति मन्त्रः। श्रीभरतप्रीत्यर्थं सकलमनोरथ सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

करन्यास एवं हृदयादिन्यास- ॐ भरताय - अंगुष्ठाभ्यां नमः - हृदयाय नमः। ॐ शंखाय - तर्जनीभ्यां नमः - शिरसे स्वाहा। ॐ कैकेयीनन्दनाय - मध्यमाभ्यां नमः - शिखायै वषट्। ॐ भरतखण्डेश्वराय - अनामिकाभ्यां नमः - कवचाय हुम्। ॐ रामानुजाय - कनिष्ठिकाभ्यां नमः - नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ सप्तद्वीपेश्वराय - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः - अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- ॐ रामचन्द्रसव्यपार्श्वे स्थितं केकयजासुतम्। रामाय चामरेणैव बीजयन्तं मनोरमम्।। रत्नकुण्डलकेयूरकंकणादिसुभूषितम्। पीताम्बर परीधानं वनमालाविराजितम्।। माण्डवीधौतचरणं रशनानूपुरान्वितम्। नीलोत्पलदलश्यामं द्विजराजसमाननम्।। आजानुबाहुं भरतखण्डस्य प्रतिपालकम्। रामानुजं स्मितास्यं च शत्रुघ्नपरिवन्दितम्।। रामन्यस्तेक्षणं सौम्यं विद्युत्पुञ्जसमप्रभम्। रामभक्तं महावीरं वन्दे तं भरतं शुभम्।।

कवच- ॐ पूर्वतो भरतः पातु दक्षिणे कैकेयीसुतः। नृपात्मजः प्रतीच्यां हि पातूदीच्यां रघूत्तमः।।

अधः पातु श्यामलागश्चोर्ध्वं दशरथात्मजः। मध्ये भारतवर्षेशः सर्वतः सूर्यवंशजः।।

शिरस्तक्षपिता पातु भालं पातु हरिप्रियः। भ्रुवोर्मध्यं जनक जावाक्यैकतत्परोऽवतु।।

पातु जनकमाता मम नेत्रे सदाऽत्र हि। कपोलौ माण्डवीकान्तः कर्णमूले स्मिताननः।।

नासाग्रं मे सदा पातु कैकेयीतोषवर्द्धनः। उदारांगो मुखे पातु वाणीं पातु जटाधरः।।

पातु पुष्करतातो मे जिह्वां दन्तान् प्रभामयः। चुबुकं वल्कलधरः कण्ठं पातु वराननः।।

स्कन्धौ पातु जितारातिर्भुजौ शत्रुघ्नवन्दितः। करौ कवचधारी च नखान् खंगधरोऽवतु।।

कुक्षौ रामानुजः पातु वक्षः श्रीरामवल्लभः। पार्श्वे राघवपार्श्वस्थः पातु पृष्ठं सुभाषणः।।

जठरं च धनुर्धारी नाभिं शरकरोऽवतु। कटिं पद्मेक्षणः पातु गुह्यं रामैकमानसः।।

राममित्रः पातु लिंगमूरू श्रीरामसेवकः। नन्दिग्रामस्थितः पातु जानुनी मम सर्वदा।।

श्रीराम पादुकाधारी पातु जंघे सदा मम। गुल्फौ श्रीरामबन्धुश्च पादौ पातु सुरार्चितः।।

रामाज्ञापालकः पातु ममांगान्यत्र सर्वदा। मम पादांगुलीः पातु रघुवंशसुभूषणः।।

रोमाणि पातु मे रम्यः पातु रात्रौ सुधीर्मम। तूणीरधारी दिवसं दिक्पातु मम सर्वदा।।

सर्वकालेषु मां पातु पाञ्चजन्यः सदा भुवि। एवं श्रीभरतस्येदं सुतीक्ष्णकवचं शुभम्।।

मया प्रोक्तं तवाग्रे हि महामंगलकारकम्। स्तोत्राणामुत्तमं सतोत्रमिदं ज्ञेयं सुपुण्यदम्।।

पठनीयं सदा भक्त्या रामचन्द्रस्य हर्षदम्। पठित्वा भरतस्येदं कवचं रघुनन्दनः।।

यथा याति परं तोषं तथा स्वकवचेन न। तस्मादेत्सदा जप्यं कवचानामनुत्तमम्।

अस्यात्र पठनान्मर्त्यः सर्वान्कामानवाप्नुयात्। विद्याकामो लभेद्विद्यां पुत्रकामो लभेत्सुतम्।।

पत्नीकामो लभेत् पत्नीं धनीर्थी धनमाप्नुयात्। यद्यन्मनोभिलषितं तत्तत्कवचपाठतः।।

लभ्यते मानवैरत्र सत्यं सत्यं वदाम्यहम्। तस्मात्सदा जपनीयं रामोपासकमानवैः।।

4- श्रीलक्ष्मण कवचम्- विनियोग- ॐ अस्य श्रीलक्ष्मणकवचमन्त्रस्य अगस्त्य ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीलक्ष्मणो देवता। शेष इति बीजम्। सुमित्रानन्दन इति शक्तिः। रामानुज इति कीलकम्। रामदास इत्यस्त्रम्। रघुवंशज इति कवचम्। सौमित्रिरिति मन्त्रः। श्रीलक्ष्मणप्रीत्यर्थं सकलमनोभिलषित सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

करन्यास एवं हृदयादिन्यास- ॐ लक्ष्मणाय - अंगुष्ठाभ्यां नमः- हृदयाय नमः। ॐ शेषाय - तर्जनीभ्यां नमः - शिरसे स्वाहा। ॐ सुमित्रानन्दनाय - मध्यमाभ्यां नमः - शिखायै वषट्। ॐ रामानुजाय - अनामिकाभ्यां नमः - कवचाय हुम्। ॐ रामदासाय - कनिष्ठिकाभ्यां नमः - नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ रघुवंशजाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः - अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- रामपृष्ठस्थितं रम्यं रत्नकुण्डलधारिणम्। नीलोत्पलदलश्यामं रत्नकंकणमण्डितम्।। रामस्य मस्तके दिव्यं विभ्रतं छत्रमुत्तमम्। वरपीताम्बरधरं मुकुटेनातिशोभितम्।। तूणीरं कार्मुकं चापि बिभ्रन्तं च स्मिताननम्। रत्नमालाधरं दिव्यं पुष्पमालाविराजितम्।। एवं ध्यात्वा लक्ष्मणं च राघवन्यस्तलोचनम्। कवचं जपनीयं हि ततो भक्त्याऽत्र मानवैः।।

कवच– लक्ष्मणः पातु मे पूर्वे दक्षिणे राघवानुजः। प्रतीच्यां पातु सौमित्रिः पातूदीच्यां रघूत्तमः।।

अधः पातु महावीरश्चोर्ध्वं पातु नृपात्मजः। मध्ये पातु रामदासः सर्वत्रः सत्यपालकः।।

स्मिताननः शिरः पातु भालं पातूर्मिलाधवः। भ्रुवोर्मध्ये धनुर्धारी सुमित्रानन्दनोऽक्षिणी।।

कपोले राममन्त्री च सर्वदा पातु वै मम। कर्णमूले सदा पातु कबन्ध भुजखण्डनः।।

नासाग्रं मे सदा पातु सुमित्रानन्दवर्धनः। रामन्यस्तेक्षणः पातु सदा मेऽत्र मुखं भुवि।।

सीतावाक्यकरः पातु मम वाणीं सदाऽत्र हि। सौम्यरूपः पातु जिह्वामनन्तः पातु मे द्विजान्।।

चिबुकं पातु रक्षोघ्नः कण्ठं पात्वसुरार्दनः। स्कन्धौ पातु जितारातिर्भुजौ पंकजलोचनः।।

करौ कंकणधारी च नखान् रक्तनखोऽवतु। कुक्षिं पातु विनिद्रो मे वक्षः पातु जितेन्द्रियः।।

पार्श्वे राघवपृष्ठस्थः पृष्ठदेशं मनोरमः। नाभिं गम्भीरनाभिस्तु कटिं च रुक्ममेखलः।।

गुह्यं पातु सहस्रास्यः पातु लिंगं हरिप्रियः। उरू पातु विष्णुतुल्यः सुमुखोऽवतु जानुनी।।

नागेन्द्रः पातु मे जंघे गुल्फौ नूपुरवान्मम। पादावंग दतातोऽव्यात्पात्वंगानि सुलोचनः।।

चित्रकेतुपिता पातु मम पादांगुलीः सदा। रोमाणि मे सदा पातु रविवंशसमुद्भवः।।

दशरथसुतः पातु निशायां मम सादरम्। भूगोलधारी मां पातु दिवसे दिवसे सदा।।

सर्वकालेषु मामिन्द्रजिद्धन्ताऽवतु सर्वदा। एवं सौमित्रि कवचं सतीक्ष्ण कथितं मया।।

इदं प्रातः समुत्थाय ये पठन्त्यत्र मानवाः। ते धन्या मानवा लोके तेषां च सफलो भवः।।

सौमित्रेः कवचस्यास्य पठनान्निश्चयेन हि। पुत्रार्थी लभते पुत्रान्धनार्थी धनमाप्नुयात्।।

पत्नीकामो लभेत्पत्नीं गोधनार्थी तु गोधनम्। धान्यार्थी प्राप्नुयाद्धान्यं राज्यार्थी राज्यमाप्नुयात्।।

पठितं रामकवचं सौमित्रिकवचं विना। घृतेन हीनो नैवेद्यस्तेन दत्तो न संशयः।।

केवलं रामकवचं पठितं मानवैर्यदि। तत्पाठेन तु सन्तुष्टो न भवेद्रघुनन्दनः।।

अतः प्रयत्नतश्चेदं सौमित्रिकवचं नरैः। पठनीयं सर्वदैव सर्ववांछितदायकम्।।

5- श्रीसीता कवचम्- विनियोग- अस्य श्रीसीताकवचस्तोत्रमन्त्रस्य अगस्तिऋषिः। श्रीसीतादेवता। अनुष्टुप्छन्दः। रामेति बीजम्। जनकजेति शक्तिः। अवनिजेति कीलकम्। पद्माक्षसुतेत्यस्त्रम्। मातुलुंगीति कवचम्। मूलकारसुरघातिनीति मन्त्रः। श्रीसीतारामचन्द्रप्रीत्यर्थ्यं सकलकामना सिद्धयर्थं च जपे विनियोगः।

करन्यास एवं हृदयादिन्यास- ॐ ह्रां सीतायै - अंगुष्ठाभ्यां नमः- हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं रामायै - तर्जनीभ्यां नमः - शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं जनकजायै - मध्यमाभ्यां नमः - शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं अवनिजायै - अनामिकाभ्यां नमः - कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं पद्माक्षसुतायै - कनिष्ठिकाभ्यां नमः - नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः मातुलुंग्यै - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः - अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- ॐ सीतां कमलपत्राक्षीं विद्युत्पुंजसमप्रभाम्। द्विभुजां सुकुमारांगीं पीतकौशेयवासिनीम्।। सिंहासने रामचन्द्रवामभागस्थितां वराम्। युक्तां कुण्डलद्वयधारिणीम्।। चूडाकंकण केयूररशनानू

पुरान्विताम्। सीमन्ते रविचन्द्राभ्यां निटिले तिलकेन च।। नूपुराभरणेनापि घ्राणेऽतिशोभितां शुभाम्। हरिद्रां कज्जलं दिव्यं कुंकुमं कुसुमानि च।। विभ्रतीं सुरभिद्रव्यं सुगन्धस्नेहमुत्तमम्। स्मिताननां गौरवर्णां मन्दारकुसुमं करे।। विभ्रतीमपरे हस्ते मातुलिंगमनुत्तमम्। रम्यहासां च बिम्बोठीं चन्द्रवाहन लोचनाम्।। कलानाथसमानास्यां कलकण्ठमनोरमाम्। मातुलुंगोद्भवां देवीं पद्माक्षदुहितां शुभाम्।। मैथिलीं रामदयितां दासीभिः परिवीजिताम्। एवं ध्यात्वा जनकजां हेमकुम्भपयोधराम्।।

कवच– श्रीसीता पूर्वतः पातु दक्षिणेऽवतु जानकी। प्रतीच्यां पातु वैदेही पातूदीच्यां च मैथिली।।

अधः पातु मातुलुंगी ऊर्ध्वं पद्माक्षजाऽवतु। मध्येऽवनिसुता पातु सर्वतः पातु मां रमा।।

स्मितानना शिरः पातु पातु भालं नृपात्मजा। पद्माऽवतु भ्रूवोर्मध्ये मृगाक्षी नयनेऽवतु।।

कपोले कर्णमूले च पातु श्रीरामवल्लभा। नासाग्रं सात्त्विकी पातु पातु वक्त्रं तु राजसी।।

तामसी पातु मद्वाणीं पातु जिह्वां पतिव्रता। दन्तान् पातु महामाया चिबुकं कनकप्रभा।।

पातु कण्ठं सौम्यरूपा स्कन्धौ पातु सुरार्चिता। भुजौ पातु वरारोहा करौ कंकणमण्डिता।।

नखान् रक्तनखा पातु कुक्षौ पातु लघूदरा। वक्षः पातु रामपत्नी पार्श्वे रावणमोहिनी।।

पृष्ठदेशे वह्निगुप्ताऽवतु मां सर्वदैव हि। दिव्यप्रदा पातु नाभिं कटिं राक्षसमोहिनी।।

गुह्यं पातु रत्नगुप्ता लिंगं पातु हरिप्रिया। ऊरू रक्षतु रम्भोरूर्जानुनी प्रियभाषिणी।।

जंघे पातु सदा सुभ्रूर्गुल्फौ चामरवीजिता। पादौ लवसुता पातु पात्वंगानि कुशाम्बिका।।

पादांगुलीः सदा पातु मम नूपुरनिःस्वना। रोमाण्यवतु मे नित्यं पीतकौशेयवासिनी।।

रात्रौ पातु कालरूपा दिने दानैकतत्परा। सर्वकालेषु मां पातु मूलकासुरघातिनी।।

एवं सुतीक्ष्ण सीतायाः कवचं ते मयेरितम्। इदं प्रातः समुत्थाय स्नात्वा नित्यं पठेत्पुनः।।

जानकीं पूजयित्वा स सर्वान्कामानवाप्नुयात्। धनार्थी प्राप्नुयाद्द्रव्यं पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात्।।

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933, 07500292413

स्त्रीकामार्थी शुभां नारीं सुखार्थी सौख्यमाप्नुयात्। अष्टवारं जापनीयं सीतायाः कवचं सदा।।

अष्टम्यो विप्रवर्येभ्यो नमः प्रीत्यार्पयेत्सदा। फलपुष्पादिकादीनि यानि तानि पृथक पृथक।।

सीतायाः कवचं चेदं पुण्यं पातकानाशनम्। ये पठन्ति नरा भक्त्या ते धन्या मानवा भुवि।।

पठन्ति रामकवचं सीतायाः कवचं विना। तथा विना लक्ष्मणस्य कवचेन वृथा स्मृतम्।।

6- श्रीराम कवचम्- विनियोग- ॐ अस्य श्रीरामकवचस्य अगस्त्यऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। सीतालक्ष्मणोपेतः श्रीरामचन्द्रो देवताः। श्रीरामचन्द्रप्रसाद सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

ध्यानम्- नीलजीमूतसंकाशं विद्युद्वर्णाम्बरावृतम्। कोमलांग विशालाक्षं युवानमतिसुन्दरम्।। सीतासौमित्रिसहितं जटामुकुटधारिणम्। सासितूण धनुर्बाणपाणिं दानवमर्दनम्।। सदा चोरभये राजभये शत्रुभये तथा। ध्यात्वा रघुपतिं क्रुद्धं कालानलसमप्रभम्।। चीरकृष्णाजिनधरं भस्मोद्धूलितविग्रहम्। आकर्षणाकृष्टशरकोदण्ड भुजमण्डितम्।। रणे रिपून् रावणादींस्तीक्ष्णमार्गण वृष्टिभिः। संहरन्तं महावीरमुग्रमैन्द्ररथ स्थितम्।। लक्ष्मणाद्यैर्महावीरैर्वृतं हनुमदादिभिः। सुग्रीवाद्यैर्महावीरै

शैलवृक्षकरोद्यतैः।। वेगात्करालहुंकारैर्भुक्कार महारवैः। नदद्भिः परिवादरिद्भः समरे रावणं प्रति।। श्रीराम शत्रुसंघान्मे हन मर्दय खादय। भूतप्रेतपिशाचादीन् श्रीरामशुविनाशय।।

कवच- श्रीरामः पातु मे मूर्ध्नि पूर्वे च रघुवंशजः। दक्षिणे मे रघुवरः पश्चिमे पातु पावनः।।

उत्तरे मे रघुपतिर्भालं दशरथात्मजः। भ्रुवोर्दूर्वादलश्यामस्तयोर्मध्ये जनार्दनः।।

श्रोत्रं मे पातु राजेन्द्रो दृशौ राजीवलोचनः। घ्राणं मे पातु राजर्षिर्गण्डौ मे जानकीपतिः।।

कर्णमूले खरध्वंसी भालं मे रघुवल्लभः। जिह्वां मे वाक्पतिः पातु दन्तावली रघूत्तमः।।

औष्ठौ श्रीरामचन्द्रो मे मुखं पातु परात्परः। कण्ठं पातु जगद्वन्द्यः स्कन्धौ मे रावणान्तकः।।

धनुर्बाणधरः पातु भुजौ मे वालिमद्र्दनः। सर्वाण्यंगुलिपर्वाणि हस्तौ मे राक्षसान्तकः।।

वक्षो मे पातु काकुत्स्थः पातु मे हृदयं हरिः। स्तनौ सीतापतिः पातु पार्श्वे मे जगदीश्वरः।।

मध्यं मे पातु लक्ष्मीशो नाभिं मे रघुनायकः। कौसल्येयः कटिं पातु पृष्ठं दुर्गतिनाशनः।।

गुह्यं पातु हृषीकेशः सक्थिनी सत्यविक्रमः। ऊरू शांर्गधरः पातु जानुनी हनुमत्प्रियः।।

जंघे पातु जगद्व्यापी पादौ मे ताडिकान्तकः। सर्वांगं पातु मे विष्णुः सर्वसन्धीननामयः।।

ज्ञानेन्द्रियाणि प्राणादीन् पातु मे मधुसूदनः। पातु श्रीरामभद्रो मे शब्दादीन्विषयानपि।।

द्विपदादीनि भूतानि मत्सम्बन्धीनि यानि च। जामदग्न्यमहादर्पलनः पातु तानि मे।।

सौमित्रिपूर्वजः पातु वागादीनीन्द्रियाणि य। रोमांकुराण्यशेषाणि पातु सुग्रीवराज्यदः।।

वाङ्मनोबुद्ध्यहंकारैर्ज्ञानाज्ञानकृतानि च। जन्मान्तर कृतानीह पापानि विविधानि च।।

तानि सर्वाणि दग्ध्वाशु हरकोदण्डखण्डनः। पातु मां सर्वतो रामः शांर्गबाणधरः सदा।।

इति श्रीरामचन्द्रस्य कवचं वज्रसम्मितम्। गुह्याद्गुह्यतमं दिव्यं सुतीक्ष्ण मुनिसत्तम्।।

यः पठेच्छृणुयाद्वापि श्रावयेद्धा समाहितः। स याति परमं स्थानं रामचन्द्रप्रसादतः।।

महापातकयुक्तो वा गोध्नो वा भ्रूणहा तथा। श्रीरामचन्द्रकवच पठनाच्छुद्धिमाप्नुयात्।।

ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः। भोसुतीक्ष्ण यथा पृष्ठं त्वया मम पुरा शुभम्।।

तथा श्रीरामकवचं मया ते विनिवेदितम्। एवं षट्कवचान्यत्र पठनीयानि सर्वदा।। पठनं षट्कवचानां श्रेष्ठं मोक्षैकसाधनम्।।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

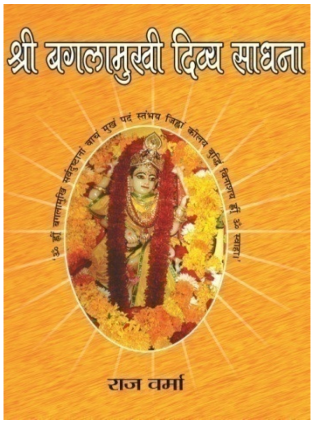

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933, 07500292413